त्रिभुवन विश्वविद्यालय हिंदी विभाग

किर्तीपुर, काठमांडू
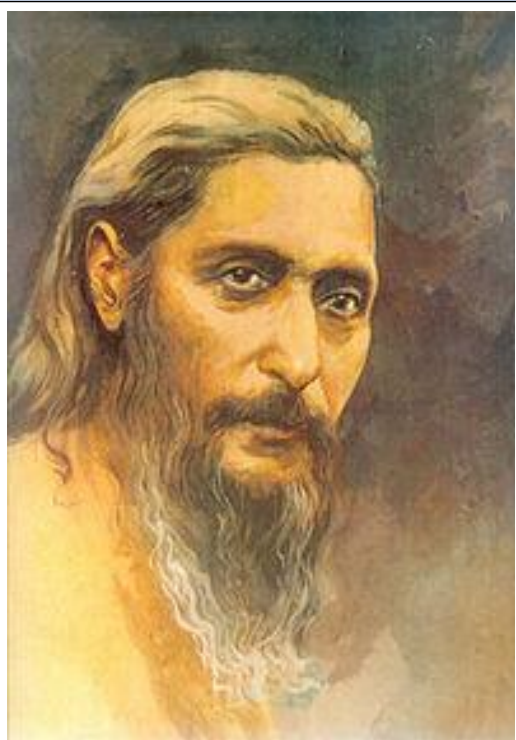
काम और ईमानदारी से किया गया परिश्रम श्रेष्ठ है जिस से जीवन निवर्हन किया जा सके अपितु परिश्रम करने का परिवेश मानवीय होना चाहिए । सौंदर्य धैर्य, सहनशीलता, स्नेह, ममता, वात्सल्य, परिश्रम जैसे कई गुणों की प्रतिमूर्ति हैं एक स्त्री ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

महाकवि

परियोजना का सार: कविता वह तोड़ती पत्थर के ऊपर विवेचना

प्रस्तोता: सन्तोष कुमार पोखरेल

एम्.ए. द्वितीय सेमेस्टर,

रोल नं.२

त्रि.वि.वि. काठमांडू, नेपाल

कोड नं. ५५६

विषय शिक्षक: डा.संजीता बर्मा

अगस्त २०२१

Contents

लेखक के बारे में 2
सारांश 5
प्रसंग 5
व्याख्या 5
उपसंहार 8

वह तोड़ती पत्थर

लेखक के बारे में

प्रारंभिक जीवन -

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी, 1896 महिषादल, मेदनीपुर, पश्चिम बंगाल में हुआ था। उनके पिता पंण्डित रामसहाय तिवारी उन्नाव (बैसवाड़ा) के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का गढ़कोला नामक गाँव के निवासी थे। हालाँकि उनके जन्म की तिथि को लेकर अनेक मत प्रचलित हैं। निराला जी के कहानी संग्रह 'लिली' में उनकी जन्मतिथि 21 फरवरी 1899 प्रकाशित है। 'निराला' अपना जन्म-दिवस वसंत पंचमी को ही मानते थे।

निराला की शिक्षा बंगाली माध्यम से शुरू हुई। हाईस्कूल पास करने के बाद उन्होंने घर पर ही हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य का अध्ययन किया। हाईस्कूल करने के पश्चात वे लखनऊ और उसके बाद गढकोला (उन्नाव) आ गये। प्रारम्भ से ही रामचरितमानस उन्हें बहुत प्रिय था। वे हिन्दी, बंगला, अंग्रेज़ी और संस्कृत भाषा में निपुण हो गए थे और श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर से विशेष रूप से प्रभावित थे। 10वी कक्षा में पहुँचते-पहुँचते इनकी दार्शनिक रुचि का परिचय मिलने लगा। निराला स्वच्छन्द प्रकृति के थे और स्कूल में पढने से अधिक उनकी रुचि घूमने, खेलने, तैरने और कुश्ती लड़ने इत्यादि में थी। संगीत में उनकी विशेष रुचि थी। अध्ययन में उनका विशेष मन नहीं लगता था। इस कारण उनके पिता कभी-कभी उनसे कठोर व्यवहार करते थे, जबकि उनके हृदय में अपने एकमात्र पुत्र के लिये विशेष प्यार था।

पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में निराला का विवाह मनोहरा देवी से हो गया। रायबरेली ज़िले में डलमऊ के पं. रामदयाल की पुत्री मनोहरा देवी सुन्दर और शिक्षित थीं, उनको संगीत का अभ्यास भी था। पत्नी के ज़ोर देने पर ही उन्होंने हिन्दी सीखी। इसके बाद अतिशीघ्र ही उन्होंने बंगला के बजाय हिन्दी में कविता लिखना शुरू कर दिया। बचपन के नैराश्य और एकाकी जीवन के पश्चात उन्होंने कुछ वर्ष अपनी पत्नी के साथ सुख से बिताये, किन्तु यह सुख ज़्यादा दिनों तक नहीं टिका और उनकी पत्नी की मृत्यु उनकी 20 वर्ष की अवस्था में ही हो गयी। वे

आर्थिक विषमताओं से भी घिरे रहे। ऐसे समय में उन्होंने विभिन्न प्रकाशकों के साथ प्रूफ रीडर के रूप में काम किया, उन्होंने 'समन्वय' का भी सम्पादन किया।

उनका जीवन कठिनमय रहा, तीन वर्ष की बालावस्था में माँ की ममता छीन गई व युवा अवस्था तक पहुंचते-पहुंचते पिताजी भी साथ छोड़ गए। प्रथम विश्वयुध्द के बाद फैली महामारी में उन्होंने अपनी पत्नी मनोहरा देवी, चाचा, भाई तथा भाभी को गँवा दिया। विषम परिस्थितियों में भी आपने जीवन से समझौता न करते हुए अपने तरीक़े से ही जीवन जीना बेहतर समझा।

कार्यक्षेत्र - करियर

सूर्यकांत त्रिपाठी 'वरुला' की पहली नियुक्ति मेषाधध राज्य में ही हुआ था। उन्होंने 1918 से 1922 तक यह नौकरी की उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य की ओर प्रवृत्त हुआ 1922 से 1923 के बीच में कोलकाता से प्रकाशित समन्वय का संपादन किया गया, से अगस्त 1923 का मण्णा के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा किताब माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहां उन्होंने संस्था के मासिक पत्रिका सुधा से 1935 के मध्य तक संबद्ध किया था। 1935 से 1940 तक कुछ समय उन्होंने लखनऊ में भी बिताया।

इसके बाद 1942 से मृत्यु के समय में इलाहाबाद में स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया था। उनकी पहली कविता जन्मभूमि प्रभात नामक मासिक पत्र में जून 1920 में, पहला कविता संग्रह 1923 में अनामिका नाम से, और प्रथम निबंध बांग भाषा का उच्चारण अक्टूबर 1920 में मासिक पत्रिका में सरस्वती प्रकाशित हुई। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने कहानियाँ उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेषरुप से कविता के कारण ही है।

सन् 1916 ई. में 'निराला' की अत्यधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचना 'जुही की कली' लिखी गयी। यह उनकी प्राप्त रचनाओं में पहली रचना है। यह उस कवि की रचना है, जिसने 'सरस्वती' और 'मर्यादा' की फ़ाइलों से हिन्दी सीखी, उन पत्रिकाओं के एक-एक वाक्य को संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेज़ी व्याकरण के सहारे समझने का प्रयास किया। इस समय वे महिषादल में ही थे। 'रवीन्द्र कविता कानन' के लिखने का समय यही है। सन् 1916 में इनका 'हिन्दी-बंग्ला का तुलनात्मक व्याकरण' 'सरस्वती' में प्रकाशित हुआ।

निराला वास्तव में ओज, औदात्य एवं विद्रोह के कवि हैं। उनपर वेदांत और रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानंद के दर्शन का प्रभाव रहा है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में रहस्यवाद भी मिलता है। निराला अकुंठ एवं वयस्क श्रंगार दृष्टि तथा तृप्ति के कवि हैं। वे सु:ख और दु:ख दोनों को भरपूर देख कर तथा उससे ऊपर उठ कर चित्रण करने की क्षमता रखते हैं। उनकी कविता में बौद्धिकता का भरपूर दबाव और तर्क संगति है। अपने युग का विषय, यथार्थ और उससे उबरने की साधना उनकी तीन प्रबंधात्मक दीर्घ कविताओं - तुलसीदास, सरोजस्मृति और राम की शक्तिपूजा में प्रकट हुई हैं।

निधन -

इलाहाबाद से सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का विशेष अनुराग लम्बे समय तक बना रहा। इसी शहर के दारागंज मुहल्ले में अपने एक मित्र, 'रायसाहब' के घर के पीछे बने एक कमरे में 15 अक्टूबर 1971 को इन्होने अपने प्राण त्याग इस संसार से विदा ली।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविताए -

- परिमल
- अनामिका
- गीतिका
- कुकुरमुत्ता
- आदिमा
- बेला
- नये पत्ते
- अर्चना
- आराधना
- तुलसीदास
- जन्मभूमि।

उपन्यास -

- अप्सरा
- अल्का
- प्रभावती
- निरूपमा
- चमेली
- उच्छ्श्रंखलता

- काले कारनामे।

कहानी संग्रह -

- चतुरी चमार
- शुकुल की बीवी
- सखी
- लिली
- देवी।

सारांश

वह तोड़ती पत्थर कविता में कवि निराला जी इलाहबाद की एक सड़क पर बड़ी धूप में अपने हाथों में भारी हथौड़ा लिए पत्थर तोड़ती एक महिला मजदूरिन का आंखोदेखा हाल बर्णन करते है । गर्मी से तपती धरती और लू में बिना किसी पेड़ की छाँव में उस स्त्री की दशा दयनीय थी । कवि उस श्यामला निर्धन क्षीणकाय स्त्री की अवस्था को सफलता पूर्वक उजागर करते हैं ।

प्रसंग

एक दिन कवि निराला जी ने उत्तर प्रदेश इलाहावाद की एक सड़क में एक निर्धन कृशकाय श्यामलांगी मजदूरिन को कड़ी धूप में बिना किसी छतरी या कोई पेड़ की छावं में हाथों में भारी हथौड़ा लिए पत्थर तोड़ रही स्त्री को देखा ।

व्याख्या

वह तोड़ती पत्थर कविता कविवर सूर्यकांत निराला की प्रख्यात कविता है जो गरीब मजदूरों की श्रम परिवेश को कारुणिक रूप से उजागर करती है । कड़ी धूप में बिना किसी छतरी और छाँव के भारी हथौड़े से औरों के मकान के लिए पत्थर तोड़ती एक मजदूरिन की दशा दयनीय दिखती है । वह काम कर रही स्त्री कवि को नारीसदृश लज्जा के कारण सीधा देख भी नहीं पा रही थी, उसे लग रहा था कि कहीं उसे कोई कवि को देखता न देख ले । वह श्यामला थी और पसीने से तर थी और गरीवी उसे इस अमानवीय परिश्रम करनेपर मजबूर कर रही थी । यों तो ऐसे दर्दनाक दृश्य दुनियाँ की बहुत जगहों पर देखे जा सकते हैं और संयोगवश कवि को आज यह भी दृष्टि गोचर हो गया । भारतीय नारी जो स्त्री लज्जा से शोभित हैं और अपने कामों में ईमानदारी से रत हैं, नारीसुलभ स्वभाव से जिनके सर नत हैं, ऐसी प्रतिनिधि नारी को निराला जी ने सबके सामने बाइज्जत रख दिया है और एक मजदूरिन के प्रति की गई अमानवीय वर्ताव

के लिए मालिकों की ध्यानाकर्षण की है । धैर्य, सहनशीलता, स्नेह, ममता, वात्सल्य, परिश्रम जैसे कई गुणों की प्रतिमूर्ति हैं एक स्त्री ।

हांलाकि कविता में प्रयूक्त शव्द संजाल से यह कहा जा सकता है के कवि भी उस यौवना की सुन्दरता में आशक्त दिख रहे हैं । श्याम तन, भर बंधा यौवन कहकर निराला जी नें अपना आकर्षण को कह ही डाला और किसी कवि को सुन्दरता के प्रति आकृष्ट होना अपराध भी तो नहीं । सौन्दर्यानुरागी होना कवियों का सर्वशुलभ गुण है वसर्ते वह संयमित रहें । उनकी यहाँ गुणग्राहिता इन पंक्तियों में भी देखी जा सकती है।

“देखते देखा मुझे तो एक बार

उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;

देखकर कोई नहीं,

देखा मुझे उस दृष्टि से”.....

हथौड़े को हाथ में लेने से ही कविता को प्रगतिशील शैली तो नहीं मिल सकती, अपितु मजदूर के अलावा एक मजदूरिन का पात्र होना और उनका सौंदर्य वर्णन कविता को प्रयोगवाद की तरफ ले गया है ।

प्रयोगवाद और प्रगतिवाद एक दुसरे के निषेध नहीं अपितु पूरक होते हैं, ऐसा मेरा मानना है ।

कविता के विना व्याख्या अधूरी रह जाती है, तो लीजिए कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की कविता ‘वह तोड़ती पत्थर':

वह तोड़ती पत्थर;

देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर-

वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;

श्याम तन, भर बंधा यौवन,

नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,

गुरु हथौड़ा हाथ,

करती बार-बार प्रहारः-

सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;

गर्मियों के दिन,

दिवा का तमतमाता रूप;

उठी झुलसाती हुई लू

रुई ज्यों जलती हुई भू,

गर्द चिनगीं छा गई,

प्रायः हुई दुपहर :-

वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार

उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;

देखकर कोई नहीं,

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं,

सजा सहज सितार,

सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,

ढुलक माथे से गिरे सीकर,

लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-

"मैं तोड़ती पत्थर।"

उपसंहार

काम और ईमानदारी से किया गया परिश्रम श्रेष्ठ है जिस से जीवन निवर्हन किया जा सके अपितु परिश्रम करने का परिवेश मानवीय होना चाहिए । सौंदर्य धैर्य, सहनशीलता, स्नेह, ममता, वात्सल्य, परिश्रम जैसे कई गुणों की प्रतिमूर्ति हैं एक स्त्री ।

प्रस्तोता सन्तोष कुमार पोखरेल, भक्तपुर नेपाल ।